जल्द आकार लेगा 'राम-पथ'

- प्रमोद भार्गव

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम 14 वर्ष वनवास के समय मध्यप्रदेश के जिन मार्गों से निकले थे, उन्हें नया तीर्थ बनाने के संकल्प को धरातल पर उतारने के लिए मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ सरकार ने चित्रकूट स्थित मंदाकिनी नदी से कावंड़ यात्रा निकालने की तैयारियां आरंभ कर दी हैं। इस यात्रा के माध्यम से मंदाकिनी का जल अमरकंटक ले जाकर नर्मदा नदी का अभिषेक किया जाएगा। जनता इस अभियान से जुड़े इसलिए सरकार ने यह अहम निर्णय लिया है। श्री कमलनाथ ने 'राम वनगमन पथ' के लिए 22 करोड़ का बजट प्रावधान भी किया है। यह प्रस्ताव आध्यात्म विभाग ने तैयार किया है। इस पर क्रियान्वयन का काम श्राइन बोर्ड करेगा।

चित्रकूट से अमरकंटक तक बनाए जाने वाले इस मार्ग पर प्राचीन समय की वास्तुकला को पुनर्जीवित करने के साथ पुराने समय की ही शहरी व्यवस्था को बहाल करना है। मसलन इस मार्ग पर जो प्राचीन नगर स्थित हैं, उनकी ऐतिहासिक विरासत का पुनुरुद्धार किया जाएगा। इस रास्ते में चित्रकूट, पन्ना, बुधवारा, रामघाट, राम मंदिर तालाब, मंडला, शडहोल, डिंडौरी और अमरकंटक को शामिल किया गया है। इन सभी स्थलों में एक ही तरह के विकास कार्य किए जाएंगे। श्रद्धालुओं के लिए पैदल पथ, धर्मशालाएं, यात्री निवास, बांस की झोपड़ियां आदि बनाए जाएंगे। कांग्रेस ने अपने चुनावी वचन-पत्र में यह कठिन काम भी पत्र में शामिल कर लिया था।

14 वर्ष के वनवास के दौरान भगवान राम, पत्नी सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ जिन मार्गों से गुजरे थे, उस 'राम-वन-गमन-पथ' को नई पहचान देने का श्री गणेश होने जा रहा है। 10 साल पहले शिवराज सिंह चौहान सरकार ने 'राम-वन-गमन-पथ' विकसित करने की घोषणा की थी। साथ ही यह भी कहा किया था कि भगवान राम जिन स्थलों पर ठहरे थे अथवा आततायियों से युद्ध लड़ा था, उन स्थलों को भी रामायण-काल के अनुरूप आकार दिया जाएगा। वर्ष 2007 में की गई इस घोषणा पर 2018 तक भाजपा सरकार कोई काम जमीन पर नहीं उतार पाई। हालांकि मुद्दे को हवा देने में भाजपा इसलिए सफल हुई, क्योंकि 2013 में समुद्र में निर्माणधीन 'जल-डमरू-मध्य-मार्ग' बनाने के परिप्रेक्ष्य में केंद्र की मनमोहन सिंह सरकार ने यह शपथ-पत्र देने की भूल की थी कि भगवान राम काल्पनिक हैं और राम-सेतु मानव निर्मित नहीं है। मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ ने अपनी नरम हिंदुत्व की पृष्ठभूमि तैयार करने की दृष्टि से इस मुद्दे पर क्रियान्वयन शुरू कर दिया है।

संस्कृति विभाग ने 11 विद्धानों की एक समिति बनाकर 'राम-वन-गमन-पथ' का मानचित्र भी बना लिया है। इसके अनुसार भगवान राम ने सीता व लक्ष्मण के साथ चित्रकूट से वर्तमान मध्यप्रदेश में प्रवेश किया। तत्पश्चात अमरकंटक होते हुए वे रामेश्वरम और फिर श्रीलंका तक गए। पौराणिक मान्यता और वाल्मीकि रामायण भी यही दर्शाते हैं। साथ ही यह भी मान्यता है कि 14 वर्ष के वनवास में भगवान राम ने लगभग 11 वर्ष 5 माह इन्हीं वनों में व्यतीत किए और वनवासियों को अपने पक्ष में संगठित किया। इस कालखंड में राम जिन मार्गों से गुजरे और जहां-जहां ठहरे, उनमें से ज्यादातर क्षेत्र सतना, रीवा, पन्ना, छतरपुर, शडहोल और अनूपपुर जिलों में हैं। इस मानचित्र और प्रतिवेदन को तैयार करने में रामकथा साहित्य, पुरातत्व, भूगोल, हिंदी और भूगर्भ शास्त्र के विषयों से जुड़े करीब 29 विद्धानों की मदद ली गई। हालांकि जनश्रुतियों में ये सभी स्थान पहले से ही मौजूद हैं

और भगवान राम से जुड़े होने के कारण पूजा और पर्यटन से भी जुड़े हैं। इस मार्ग के मानचित्र भी इतिहास की पुस्तकों में दर्ज हैं।

प्रदेश सरकार केवल चित्रकूट को प्राचीन स्वरूप देने की इच्छुक है। भगवान श्रीराम ने वनवास के कालखंड में सबसे ज्यादा समय चित्रकूट में ही व्यतीत किया था। इसका जीर्णोद्धार किया जाना इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि एक तो यहां श्रद्धालुओं की संख्या निरंतर बढ़ रही है, दूसरे इस धार्मिक पर्यटन से स्थानीय लोगों को रोजगार और सरकार को बेहतर आय भी होने लग गई है। 2001 में यहां पांच लाख लोग धर्म-लाभ लेने आए थे, जबकि यह संख्या 2013 में बढ़कर 1.67 करोड़ हो गई। इस क्षेत्र में कामदगिरी पर्वत के दर्शन और उसकी परिक्रमा का बड़ा महत्व है। इसके साथ रामघाट, हनुमानधारा, राम-भरत-मिलाप मंदिर और मंदाकिनी नदी प्रमुख धर्म स्थल हैं। 'रामचरित मानस' के रचयिता तुलसीदास जी का आश्रम भी चित्रकूट में ही है। यहीं उन्होंने सरल 'अवधि' भाषा में रामायण की रचना की थी। यदि इस पूरे क्षेत्र में सुगम पथ, ठहरने व खान-पान और वाहनों के आवागमन व पार्किंग की उचित व्यवस्था हो जाती है तो श्रद्धालुओं संख्या में और वृद्धि के साथ सरकार की आय में भी बढ़ोतरी होगी।

इस पथ पर वर्चस्व कायम करने के साथ प्रदेश सरकार प्रत्येक ग्राम पंचायत में गौशाला का निर्माण भी कर रही हैं। मुख्यमंत्री श्री कमलनाथ गाय पर 'गंभीर' हैं। याद रहे 1934 में महात्मा गांधी ही पहली बार गौरक्षा का प्रस्ताव लेकर आए थे। वर्ष 1956 में मध्यप्रदेश के गठन के बाद 1956-57 में कांग्रेस के तत्कालीन और प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री रविशंकर शुक्ला ने प्रदेश में कानून बनाकर गौ-हत्या पर प्रतिबंध लगाया था। यह भी ठोस हकीकत है कि कांग्रेस के राज में ही प्रदेश में बड़ी और प्रमुख गौशालाएं बनीं थीं। यदि शिवराज सरकार की गौ-रक्षा की इच्छा प्रबल होती तो भाजपा 15 साल के लंबे कार्यकाल में प्रत्येक पंचायत में गौशाला अस्तित्व में आसकती थी ? किंतु ऐसा हुआ नहीं।

(प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचरउ सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।